पसंदीदा जगह

देवधाम जोधपुरिया

रामफूल गुर्जर,
सहा. निदेशक(जन संपर्क)
जयपुर, राज.
(मो.)8875002802

धार्मिक भावना से ओतप्रोत भारत में प्राचीनकाल से ही धार्मिक स्थलों के दर्शनों की परम्परा रही है। शहरों की भीड़भाड़ व भागदौड़ से दूर कुछ दिन शांति से जीवन जीने का मौका चाहिये तो एक ऐसी जगह है जहां किसी भी दिन आप पर्यटन व धार्मिक भावना की दृष्टि से जयपुर–कोटा राष्ट्रीय उच्चमार्ग सं. 12 (एनएच–12) पर जयपुर से करीब 80 किलोमीटर दूर टोंक जिले की निवाई तहसील में प्रसिद्ध वनस्थली विद्यापीठ के पास श्री देवनारायण भगवान मंदिर, जोधपुरिया आप जा सकते हैं। इस खुशनुमा जगह को आम भाषा में **''देवधाम जोधपुरिया''** भी कहते है।

मंदिर परिसर व इसके आसपास एक साथ कई रंग देखने हो तो आप लक्खी मेले पर रात को जावें तो आपका लौटने का मन नहीं करेगा क्योंकि राजस्थान के अलावा भी दिल्ली, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश सहित कई प्रदेशों के भक्तगण सामहिक पदयात्रा के रूप में विभिन्न मार्गो से शोभायात्रा के रूप में गाते, बजाते और नाचते हुए यहां पहुंचते है। इनके हाथों में विशाल पचरंगी ध्वज पताकाएं होती है। मंदिर पहुंचने पर ध्वज पताका लिये हुये भक्तों में ऐसी होड़ मचती है कि कौन सबसे पहले मंदिर में ध्वज चढावें यह दृश्य ऐसा लगता है जैसे विशाल ध्वज पताका हाथों में लिए पदयात्रियों की सामूहिक दौड़ प्रतियोगिता हो रही हों।

सैकड़ों की संख्या में महिलाएं भी अपने सिर पर मंगल कलश लेकर कलश यात्रा के साथ मंदिर के दर्शनों के लिए जाती हैं। कई एकड़ में फैले मंदिर में रात्रि जागरण के दौरान आपको चिल्ड्रन पार्क में झूला झूलते नन्हें–मुन्ने व खेलते बच्चे दिखेंगे, वहीं दूसरी ओर विभिन्न तरह के ग्रामीण परम्परागत खेल जैसे – कबड्डी, दंगल, रस्साकसी, घोड़ा दौड़, भारी पत्थर को एक हाथ से वैटलेफ्टिंग की तरह उठाते हुए नौजवानों का झुंड भी आपको रोमांचित कर देगा। सैंकड़ों बुजुर्ग कलाकारों के बीच सतरंगे परिधानों में सजी–धजी ''माना गुर्जरी'' एवं उनकी सखी सहेलियों को आप कानों पर हाथ लगाकर 'गोठा' गाते हुए भी देख सकते हैं। सांस्कृतिक धरोहर के रूप में यह लुप्त होती हुई

हमारी ऐसी गायन संस्कृति है जिसे इन लोक कलाकारों ने अपने दमखम पर बचाये रखा है। बूंदी जिले में देई, नैनवां, नगरफोर्ट, देवली, उनियारा, पीपलू, टोंक, निवाई एवं चाकसू इत्यादि ग्रामीण अंचलों से अपने ठेठ देहाती पारम्परिक पोशाक में बिना किसी वाद्य यन्त्र के सैंकड़ों टीमें ''गोठा प्रतिस्पर्द्धा'' में यहां पर भागीदारी निभाती है। दर्शकों का दिल जीतने वाले यह कलाकार अपनी कर्ण प्रिय बेहद मनमोहक आवाज में एक से बढ़कर एक प्रस्तुतियों से आपको रातभर बांधे रखेंगे।

कांसे की थाली पर कमल के फूल के दर्शन

मंदिर प्रांगण में के आगे बने विशाल चबुतरें के चारों ओंर रात्रि में श्रृद्धालुओं का सैलाब उमड़ पडता है, वे एकटक परंपरागत परिधान पहने मंदिर के भोपाजी के द्वारा एक हाथ लोहे की पली में ज्योत जलाकर और एक हाथ में कांसे की थाली लेकर घूम-घूम कर नाचते हुए को देखते हैं और नृत्य करते हुए ही कांसे की थाली में ''कमल के फूल'' की आकृति बनाकर रात के 12 बजे भक्तों को दर्शने कराता हैं। इसके बाद भक्तों का मंदिर से विसर्जन शुरू हो जाता हैं।

प्राकृतिक सौन्दर्य से सरोबार यह धार्मिक स्थान पर्यटकों को प्रकृति से जुड़ने का मौका देकर आपकी यात्रा को यादगार बना देता है। मासी डेम की गोद में त्रिवेणी जल संगम है जहां मासी, बांडी एवं खोराखुसी नदियां एक होकर जोधपुरिया श्री देवनारायण मंदिर पर मिलती है तो ऐसा लगता है मानो भगवान के चरणों को चूम-चूम कर पखार रही हो। यह मंदिर वाकई दर्शन योग्य है क्योंकि ब्रह्म मुहुर्त में 4 बजे, 11 बजे व 7 बजे होने वाली नित्य आरती के समय झालर, शंख, नंगाड़े और नौबत बाजों की धुन यहां की भव्य सुन्दरता में और भी चार चांद लगा देती है। श्री देवनारायण मंदिर चेरिटेबल ट्रस्ट जोधपुरिया द्वारा संचालित सम्पूर्ण गुर्जर समाज में मशहूर इस मंदिर पर समय-समय पर भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति महामहिम श्री भैरोंसिंह शेखावत एवं राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत सहित कई केन्द्रीय मंत्री एवं माननीय न्यायाधीशों सहित कई बड़ी हस्तियां भी लक्खी मेले के अलावा भी यहां होने वाले मनमोहक कार्यक्रमों के जरिये रूबरू हुए हैं।

हमारे पौराणिक धार्मिक ग्रंथों में भगवान श्री देवनारायण को विष्णु भगवान का अवतार माना गया है। जिन्होंने माता साढू की गोद में अवतार के रूप में प्रकट होकर बचपन से ही अनेक चमत्कार दिखाये। इनके जन्म के संबंध में कहा गया है कि

संवत् 968 के अंश, जन्म लिया गुर्जर के वंश।
साढू सती के वचनों द्वारा, कमल फूल देव लिया अवतार।।

अखण्ड ज्योति

मंदिर के संबंध में और भी कई पौराणिक कथाएं एवं किवंदतिंया भी यहां प्रचलित हैं। आज भी मंदिर की विशाल परिक्रमा परिसर में ''अखण्ड ज्योति'' जल रही है, जिसके दर्शन कर भक्तगण अपने आपको भाग्यशाली मानते हैं। यहां के बुजुर्ग बताते हैं कि किसी समय आई भयंकर बाढ में उस समय का पूरा मंदिर पानी में डूब गया था तब भी लोगों ने सदियों से प्रज्ज्वलित इस अखण्ड ज्योति को ज्यों का त्यों पानी में लहरों के बीच तैरते हुए देखा था।

इस अखण्ड ज्योति के पास ही विशाल भू-गृह में भक्तों द्वारा चढ़ाया हुआ देशी घी का भंडारा है। जिसमें सैकडों साल पुराना घी भरा हुआ है और इसे आयुर्वेदिक उपचार के रूप में काम में लिया जाता है। प्रदेश की ख्याति प्राप्त लेखिका श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत द्वारा लिखी गई 'बगडावत महागाथा' एवं अन्य इतिहासकारों ने इस मंदिर की प्राचीनता एवं आध्यात्मिकता पर बहुत कुछ लिखा है जैसे -

''दातां बण्यो द्वारिका, फरणा बद्रीनाथ।
कलियुग में केशव लियो अवतार, जोधपुरिया जगन्नाथ।''

मंदिर के चारों ओर विशाल परिक्रमा परिसर की दीवारों पर बगडावत गाथा आर्ट को उकेरा गया है जिससे भावी पीढ़ी अपने वैभव व गौरवशाली शानदार इतिहास से परिचित हो सके। मुख्य मंदिर के चारों ओर परिक्रमा में वेदमाता माँ गायत्री, गोपाल श्रीकृष्ण के रूप में श्री देवनारायण भगवान अपनी गौमाता के साथ, माता साढू की गोद में झूला झूलते श्री देवनारायण भगवान, श्री राम दरबार, श्री राधाकृष्ण एवं श्री हनुमान जी के दो मंदिर अपनी अलग विशेषता लिये कई मंदिरों के दर्शन भी आप कर सकेंगे। यहीं पर श्री श्री 1008 श्री सेवानंद जी महाराज का धूणा एवं प्रसादी का भण्डारा भी चलता रहता है।

बर्ड्स फेयर

मासी बांध की शांत व सरस लहरों के बीच कलरव करते अनेक रंग-बिरंगे पक्षी, छोटे-छोटे बालू रेत की टीले भी आपका मन मोह लेंगे। प्रकृति के संरक्षण को बढ़ावा देने की दृष्टि से टोंक जिले का ''पक्षी मेला'' (बर्ड्स फेयर) भी इसी स्थान पर आयोजित

होता है जिसमें हजारों स्कूली बच्चे उत्साहपूर्वक कोतूहल भरी निगाहों से दूरबीन एवं प्रकृति विशेषज्ञों (नेचर एक्सपर्ट) की मदद से पक्षियों की पहचान व सवाल–जवाब करते नज़र आते हैं। मंदिर परिसर के अन्दर एवं बाहर का पूरा वातावरण आपको हरियाली और आध्यात्मिकता की ओर इंगित करता दिखाई देगा। विभिन्न प्रजातियों के सैंकड़ों वैरायटी वाले पेड़–पौधे के बीच से छनकर आती मीठी–मीठी धूप बेहद शांतिप्रिय वातावरण में आपको देवमयी कर देगी। सच पूछे तो यह खूबसूरत हरीतिमा और फूलों की लालिमा लिए ऐसी जगह हैं जहां का रंगीन नजारा बरबस ही आपको नज़र आता है और मासी डेम की त्रिवेणी पर पवित्र स्नान का मजबूर करता है। एक–दो दिन की यात्रा आपको तरोताज़गी से सरसब्ज कर देगी। वैसे तो पूरे 12 महीनें ही किन्तु सावन–भादों के बरसाती मौसम में तो बड़ी संख्या में यहां पर सवामणी एवं सामूहिक गोठ की बहार सी छा जाती है।

जोधपुरियां मंदिर परिसर में खूबसूरत पार्क हैं, जहां माता साढू, शेरनी का दूध पीते हुए श्री देवनारायण भगवान एवं सफेद घोड़े पर सवार सवाई भोज की मूर्तियां स्थापित है। जो भक्तों में दर्शन की ललक जगाती हैं। मेला स्तर पर आयोजित हाट़ बाजार जहां काश्तकारों, गृहणियों को एक ही छत के नीचे अपने जानवरों के श्रृंगार का सामान एवं रोजमर्रा काम में आने वाली खाद्य वस्तुओं की खरीददारी का लुत्फ उठाते देखा जा सकता है। अनेक पौराणिक ग्रन्थों में भी श्री जोधपुरिया मंदिर के धार्मिक महत्व को विस्तारपूर्वक समझाया गया है।

****